हिंदी कहानी साहित्य का विकास

हिंदी साहित्य के कवि

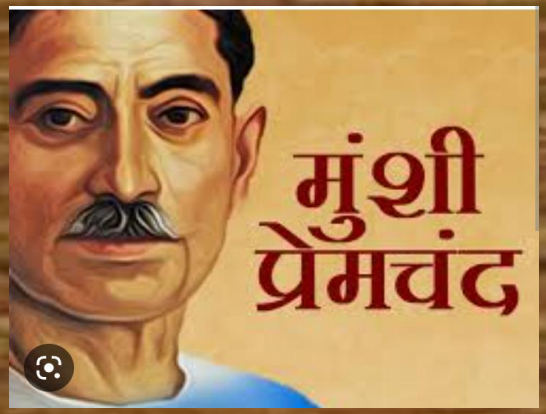

मुंशी प्रेमचंद

विशंभर नाथ शर्मा कौशिक

राजा राधिका रमन प्रसाद सिंह

जयशंकर प्रसाद

पंडित माधव राज स्प्रे

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

हिंदी साहित्य का इतिहास

आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य मे कहानी एक रुचिकर विधा बनकर सामने आई है क्योंकि गद्य की अन्याय विधाओं की अपेक्षा कहानी विधा को पढ़ने वाले पाठकों की संख्या अधिक है पिछले 100 वर्ष हिंदी कहानी ने एक रुचिकार विधा के रूप मैं प्रगति की है मैं उत्साहवर्धक है इस साहित्यिक विधा की प्रमुख का कारण यह है कि आरंभ में ही कुछ महान रचनाकारों ने अपनी उत्कृष्ट कला प्रतिभा से उसे प्रारंभिक दौर कि लड़खड़ा हट और अन गढ़ पंथ से मुक्त करके स्वच्छ व्यक्ति की तरह लंबे मार्ग की ओर अग्रसर है

हिंदी कहानी साहित्य के युग

भारतेंदु युग

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

प्रसाद युग

जयशंकर **प्रसाद**

प्रेम चंद युग

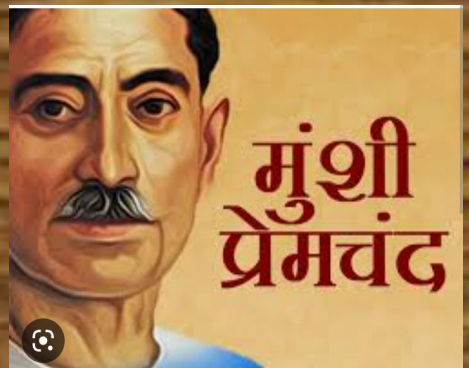

भारतेंदु युग

हिंदी कहानी के उद्भव में 1900 ई में प्रकाशित हुई । सरस्वती पत्रिका का विशेष रूप से योगदान रहा है इसमें किशोरी लाल गोस्वामी की कहानी इंदुमती प्रकाशित हुई आगे का दशक कहानी की उपलब्धियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा सकता हिंदी में मौलिक कहानियों का आरंभ जयशंकर प्रसाद से माना जा सकता है कहानी के विकास की दृष्टि से सन 1900 का समय सही मानना उचित है क्योंकि इसके पूर्व हिंदी साहित्य में इस विधा का सूत्र पात नहीं हुआ था हिंदी कहानी का प्रारंभिककाल प्रयोगात्मक रहा इन कहानियों में रोचकता कोतूहल है इस काल की कहानियां घटना प्रधान है।

प्रसाद युग

इस युग में जयशंकर प्रसाद की प्रेरणा से महत्वपूर्ण पत्रिका इंदुमति प्रकाशित हुई और इसमें प्रसाद जी की पहली कहानी ग्राम प्रकाशित हुई इस पत्रिका के माध्यम से जीपी श्रीवास्तव राधिका, रमन प्रसाद सिंह, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, प्रेमचंद आदि कहानीकारों की कहानियां प्रकाशित हुई। हिंदी कहानी के मंच पर प्रसाद जी की आरंभिक रचनात्मक सक्रियता इस शताब्दी के दूसरे दशक की इतिहासिक घटना के बाद,हिंदी कहानी का विकास तीव्र गति से हुआ इस समय के प्रमुख कहानीकार प्रेमचंद गंगा प्रसाद आदि कहानीकारों का नाम उल्लेखनीय है।

प्रेमचंदोत्तर युग

प्रेमचंदोत्तर युग में कहानी साहित्य में विधा दिखाई देती है मुंशी प्रेमचंद ने हिंदी कहानी में यथार्थ चित्रण कि नीव रखी थी आगे चल कर वह किसी रूप में सन 1916 ई. से 1936 ई. के बीच मे सामने आई इनकी कहानियां सांसारिक देश प्रेम है इन्होंने जटिल क्रूर यथार्थवादी कहानियां भी लिखी प्रेमचंद युग में प्रेमचंद जी उपन्यास के क्षेत्र में जितने महान है उस से बढ़कर कहानी क्षेत्र में उनका नाम है उन्होंने अपने जीवन में 300 कहानियां लिखी जो कि मानसरोवर के आठ भागों में संकलित है प्रसिद्ध जी की कहानियां, पूस की रात, बड़े घर की बेटी, ईदगाह, नमक का दरोगा आदि है।

यथार्थवादी कहानी

इस प्रकार की कहानियों के प्रवर्तक पांडे बच्चन शर्मा उग्र जी हैं उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक परंपराओं रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों का खुलकर विरोध किया है तथा सामाजिक कुरीतियों और भ्रष्टाचार का वर्णन किया है इनके दोजक की आग, चिंगारियां बलात्कार कहानी संग्रह कही कहीं यथार्थवादी वर्णों में अश्लीलता आ गई।

मनोविश्लेषणात्मक कहानियां

ऐसी कहानियों के जन्मदाता में अज्ञेय जी तथा इलाचंद्र जोशी को माना जाता है इस परंपरा के कहानी कार फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक से अधिक प्रभावित है अज्ञेय जी ने अपने प्रमुख कहानी संग्रह – विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात तथा जय दौल है जोशी जी ने भी अहम् को उद्घाटित करने का प्रयास किया है।

सामाजिक यथार्थवादी कहानियां

ऐसी कहानियों की परंपरा का आरंभ प्रेमचंद जी कर चुके थे किंतु इसे नया स्वरूप प्रदान करने का श्रेय यशपाल जी ने माक्सेवादी दर्शन से प्रभावित की विसंगतियों का मार्मिक चित्रण है इनके कहानी संग्रह मैं पिंजरे की उड़ान, तर्क का तूफान,फूलों का कुर्ता आदि । विष्णु प्रभाकर वर्तमान सामाजिक व्यवस्था तथा पारिवारिक संबंधों को अपनी कहानियों का विषय बनाया । रहमान का बेटा, जज का फैसला, अभाव उच्च कोटि की रचनाएं है।

स्वतंत्रोतर कहानी

स्वतंत्रता के बाद कहानी के क्षेत्र में कई परिवर्तन हुए,विविध समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ। इसी के साथ साथ कस्बों और शहरों और गांव के रहन-सहन की कहानियां लिखी गई गांव के रहन सहन रीति रिवाज कहानीकारों में फणीश्वरनाथ नाथ प्रसिद्ध है गांव की धूल,सोंधी महक इन कहानियों में गांव का जीवन चित्रित है इसी युग में उच्च वर्ग में व्याप्त कुंठा, शहरी जीवन की भीड़ में व्यक्ति का अकेलापन पारिवारिक विघटन, मानसिक तनाव आदि। मोहन राकेश जी तनावो के कहानीकार है । नए बादल ,जानवर और जानवर इनके कहानी संग्रह है मनु भंडारी, कृष्णा सोबती,शिवानी वर्तमान युग के प्रसिद्ध का कहानीकार है। आक्रोश, रोमांस युक्त यथार्थ, एकांकी पन की अनुभूति, आधुनिक बोध आज की कहानी का मुख्य विषय है।

मनोवैज्ञानिक कहानियां

इस परंपरा के प्रवर्तक जैनेंद्र जी है। इनके आगमन पर हिंदी कहानी से एक नया युग प्रारंभ हुआ। इन्होंने मनोविज्ञानिक कहानियां लिखी। इन्होंने स्थूल समस्याओं नाम साड़ी के स्थान पर आंतरिक समस्याए सुलझाने का प्रयास किया। पत्नी,खेल,पाजेब, समाप्ति आदि उनकी लोकप्रिय कहानी है। गोविंद बल्लभ की कहानियों में यथार्थ और कल्पना का सुंदर समन्वय है। सिया रामशरण की कहानी में कोमल भावनाओं का आकर्षण शैली में चित्रण हुआ है।

निष्कर्ष

इस प्रकार से हम यह कह सकते है कि इस युग के प्रमुख कहानीकारों ने इस युग को एक नई दिशा दी है तथा इस प्रकार हिंदी का कहानियां साहित्य सभी विधाओं से अधिक विकासशील है।

धन्यवाद